डॉ. अर्पिता अग्रवाल

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का यात्रा वृत्तान्त

अंडमान द्वीप समूह तीन भागोंः उत्तरी अंडमान, मध्य अंडमान और दक्षिणी अंडमान में बंटा है। अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर दक्षिणी अंडमान में आती है। भारत की मुख्य भूमि के चेन्नई, कोलकाता, विशाखापट्टनम शहरों से हवाई जहाज और समुद्री जहाज द्वारा पोर्टब्लेयर पहुंचा जाता है। यह तीनों शहर पोर्टब्लेयर से लगभग समान दूरी पर स्थित हैं। अंडमान द्वीप समूह के सबसे उत्तर में डिगलीपुर द्वीप और निकोबार द्वीप समूह के सबसे दक्षिण में ग्रेट निकोबार द्वीप स्थित हैं। इसी द्वीप पर भारत का दक्षिणतम बिंदु 'इंदिरा पॉइंट' है।

भारतवर्ष के पूर्व में बंगाल की खाड़ी में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह हैं और पश्चिम में अरब सागर में लक्षद्वीप स्थित है। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और लक्षद्वीप केंद्र शासित प्रदेश हैं। यहां के समुद्र तट विदेश के समुद्र तटों जितने ही सुंदर कहे जाते हैं। अंडमान निकोबार द्वीप समूह 572 छोटे-बड़े द्वीपों से बना है। 572 द्वीपों से सजा अंडमान निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी के दक्षिण में हिंद महासागर में स्थित हैं। नीले समुद्र में हरे-भरे द्वीपों को हवाई जहाज में ऊँचाई से देखने पर लगता है जैसे नीलम और पन्ना दूर-दूर तक बिखरा पड़ा हो। यहां पर उष्णकटिबंधीय घने जंगल हैं। इन द्वीप समूहों के कुछ ही द्वीपों पर लोग रहते हैं, कुछ द्वीपों पर जारवा, सेंटिनल, ओंगी, ग्रेट अंडमानी आदि आदिवासी जातियाँ रहती हैं। आदिवासियों के रहने से वहां पर्यटकों का जाना वर्जित है क्योंकि आदिवासी किसी भी बाहरी व्यक्ति को देखते ही उस पर जानलेवा हमला कर देते हैं। अंडमान द्वीप समूह उत्तर में और निकोबार द्वीप समूह दक्षिण में स्थित है। यह एक दूसरे से 150 किलोमीटर दूर व 10 डिग्री अक्षांश द्वारा एक दूसरे से पृथक हैं। अंडमान द्वीप समूह भी तीन भागोंः उत्तरी अंडमान, मध्य अंडमान और दक्षिणी अंडमान में बंटा है। अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर दक्षिणी अंडमान में आती है। भारत की मुख्य भूमि के चेन्नई, कोलकाता, विशाखापट्टनम शहरों से हवाई जहाज और समुद्री जहाज द्वारा पोर्टब्लेयर पहुंचा जाता है। यह तीनों शहर पोर्टब्लेयर से लगभग समान दूरी पर स्थित हैं। अंडमान द्वीप समूह के सबसे उत्तर में डिगलीपुर द्वीप और निकोबार द्वीप समूह के सबसे दक्षिण में ग्रेट निकोबार द्वीप स्थित हैं। इसी द्वीप पर भारत का दक्षिणतम बिंदु 'इंदिरा पॉइंट' है। अंडमान में ही भारत का इकलौता सक्रिय ज्वालामुखी है, जो बैरन द्वीप पर स्थित है। पोर्ट ब्लेयर के दक्षिण में लिटिल अंडमान स्थित है। यह पोर्ट ब्लेयर से समुद्र के रास्ते 120 किलोमीटर दूर है। लिटिल अंडमान द्वीप ओंगी जनजाति की निवास स्थली है। अंडमान में बाराटांग द्वीप में चूना पत्थर की प्राकृतिक गुफाएं और मड वल्केनो (मिट्टी के ज्वालामुखी) देखने पर्यटक जाते हैं। मड बल्केनो से कीचड़ का उत्सर्जन होता है। ये ज्वालामुखी भारत में सिर्फ अंडमान में पाये जाते हैं। चूना पत्थर की प्राकृतिक गुफाओं तक नाव से मैंग्रोव वृक्षों के बीच से होकर जाते हैं। यहां जाने के लिए पोर्ट ब्लेयर से सड़क मार्ग व समुद्री मार्ग की 101 किमी की मिश्रित यात्रा करनी पड़ती है।

वर्ष 2018 में अंडमान के तीन द्वीपों के नाम बदल दिये गए। रॉस आईलैंड का नाम नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप रखा गया, हैवलॉक आईलैंड का नाम स्वराज द्वीप रखा गया और नील आईलैंड का नाम शहीद द्वीप रखा। 23 जनवरी वर्ष 2023 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती 'पराक्रम दिवस' के अवसर पर अंडमान के 21 अनाम द्वीपों के नाम 21 परमवीर चक्र पुरस्कार विजेता जवानों के नाम पर रखे गये हैं।

वर्ष 2023 में अगस्त माह में हम अंडमान के वीर सावरकर एयरपोर्ट पर पहुँचे। समुद्र से घिरा वीर सावरकर एयरपोर्ट एक छोटा सा एयरपोर्ट है, जहां पर एक ही हवाई पट्टी है। एयरपोर्ट से हमें अपने होटल 'हॉर्नबिल नेस्ट रिजॉर्ट' पहुंचने में लगभग 30 मिनट लगे। समुद्र के किनारे- किनारे चलती सड़क, सड़क

रॉक आइसलैण्ड के निकट स्थित नार्थ बे नामक समुद्र तट जल क्रीडा के लिए प्रसिद्ध है। बनाना राइड, स्नोरकलिंग, सी वाक, स्कूबा डाइविंग आदि के लिए ही बड़ी संख्या में पर्यटक यहां जाते हैं। यहां स्थित लाइटहाउस की फोटो पुराने 20 रुपये के नोट पर छपी है। अंडमान के माउंट हैरिएट नेशनल पार्क का नाम वर्ष 2021 में माउंट मणिपुर कर दिया गया। यहां मणिपुर के स्वतंत्रता सेनानियों को अंग्रेजों ने बंदी बनाकर रखा था क्योंकि तब तक सेल्यूलर जेल का निर्माण नहीं हुआ था।

के दूसरी ओर हरियाली से सजी पहाड़ी, सारा रास्ता अत्यंत सुंदर था। जगह-जगह ऊंचे-ऊंचे नारियल के वृक्ष दिखाई दिए। हमारे ड्राइवर ने रास्ते में हमें बताया- 'अंडमान के एक द्वीप पर हॉर्नबिल पक्षी की एक प्रजाति पायी जाती है। इसी के नाम पर इस रिजोर्ट का नाम है। हॉर्नबिल की एक अन्य प्रजाति ग्रेट हॉर्नबिल, केरल और अरुणाचल प्रदेश का राज्य पक्षी है। अंडमान को हनुमान जी से जोड़ा जाता है और निकोबार का अर्थ निकोवरम शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है नंगे लोग। निकोबार द्वीप समूह पर आम जनता का प्रवेश संभव नहीं हैं। यहां जाने के लिए विशेष अनुमति की आवश्यकता होती है। करोड़ों वर्ष पहले जब भारतीय प्लेट, बर्मा प्लेट से टकराई थी, तब अराकन पर्वत माला का निर्माण हुआ था। यह पर्वतमाला बर्मा में सतह के ऊपर दिखाई देती है और इसकी बंगाल की खाड़ी के समुद्र में डूबी ऊंची पहाड़ियों के शिखर पर अंडमान और निकोबार द्वीप समूह उभर आए हैं। इसीलिए अंडमान निकोबार द्वीप समूह का अधिकांश भाग भारत की अपेक्षा बर्मा और इंडोनेशिया में स्थित है।

"हॉर्नबिल नेस्ट रिजॉर्ट" एक ऊंची सी पहाड़ी पर बसा है जहां से हिलोरे लेते समुद्र को देखा जा सकता है। अंडमान में रात जल्दी होती है यह पूर्व में स्थित होने के कारण यहां सूर्योदय बहुत जल्दी होता है, सुबह 5:00 बजे उजाला हो जाता है। 8:00 बजे तो बहुत तेज धूप होती है। धूप इतनी तेज होती है कि समुद्र तट पर कुछ देर घूमने और जल क्रीडा करने पर ही त्वचा का रंग काला हो जाता है।

एयरपोर्ट से होटल हॉर्नबिल नेस्ट जाते समय हमें मार्ग में के कामराज, नेताजी सुभाष चंद्र बोस एवं रवींद्रनाथ टैगोर की प्रतिमाएं दिखाई दीं। एक मार्ग का नाम कामराज मार्ग था। जिसका नामकरण तमिलनाडु राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री कामराज के नाम पर किया गया था। शिक्षा के क्षेत्र में कामराज का महत्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने ही शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए मिड डे मील योजना प्रारम्भ की थी।

लगभग 12 बजे हम राजीव गांधी जल क्रीड़ा परिसर जेटी से रौस आइलैंड गए। जेटी एक बहुत छोटा सा बंदरगाह जैसा होता है, जहां से छोटे-छोटे जहाज या मोटर बोट चलती हैं। यहां पर विभिन्न जल क्रीडा हो रही थीं। लोग स्कूटर से वाटर स्कीइंग कर रहे थे। इस परिवर्तनशील प्रकृति में समय कैसे बदल जाता है यह यहां आकर देखा। वैभव, ऐश्वर्य, कैसे नष्ट हो जाता है। सुंदर भवन कैसे खंडहर बन जाते हैं। अंग्रेजों के डांस फ्लोर, स्विमिंग पूल, बेकरी, बार, इत्यादि पेड़ों की मोटी जड़ों से लिपटे खंडहर बने अपनी कहानी बयाँ कर रहे थे। हर प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त इस द्वीप को 'पेरिस ऑफ ईस्ट' की उपाधि दी गई थी। वर्ष 2004 की सुनामी में पोर्ट ब्लेयर को रौस आईलैंड ने ही बचाया था। उसी ने सुनामी की ऊंची लहरों को अपनी ऊंची चट्टानों द्वारा रोक कर उन्हें अत्यंत धीमा कर दिया था। 26 जून 1941 को यहां आए एक भयंकर भूकंप ने रौस आईलैंड के बीच दरार पैदा कर उसे दो भागों में तोड़ दिया था। यहां के कई भवनों को बहुत नुकसान हुआ। इससे यहां के लोग भयभीत हो गए। अंग्रेज इस द्वीप पर लगभग 100 साल रहे। इसके बाद जापानियों के हमले के डर से अंग्रेज इस द्वीप को छोड़कर भारत की मुख्य भूमि की ओर चले गए। यहां बहुत सारे हिरण हैं। अंग्रेजों ने अपने शिकार के शौक को पूरा करने के लिए यहां हिरण बसाए थे। लोग हिरण के साथ फोटो खिंचा रहे थे। यहां फिश मार्केट भी है। यहां बैटरी वाली गाड़ी से द्वीप की ऊंची सड़क पर घूमा जा सकता है। यहां पर एक निश्चित स्थान से आगे नहीं जा सकते हैं क्योंकि पहाड़ी के दूसरी तरफ समुद्र है। रौस आइसलैण्ड के निकट स्थित नार्थ बे नामक समुद्र तट जल क्रीडा के लिए प्रसिद्ध है। बनाना राइड, स्नोरकलिंग, सी वाक, स्कूबा डाइविंग आदि के लिए ही बड़ी संख्या में पर्यटक यहां जाते हैं। यहां स्थित लाइटहाउस की फोटो पुराने 20 रुपये के नोट पर छपी है। अंडमान के माउंट हैरिएट नेशनल पार्क का नाम वर्ष 2021 में माउंट मणिपुर कर दिया गया। यहां मणिपुर के स्वतंत्रता सेनानियों को अंग्रेजों ने बंदी बनाकर रखा था क्योंकि तब तक सेल्यूलर जेल का निर्माण नहीं हुआ था।

शाम को हम पोर्ट ब्लेयर की सेल्यूलर जेल में लाइट एंड साउंड शो देखने गए। 7 विंग वाली 698 सेल की इस जेल का निर्माण वर्ष 1896 से 1906 के मध्य हुआ। यहां कमरे इस तरह

अन्डमान की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में स्थित सेल्यूलर जेल।

बनाए गए थे कि बंदियों को एक-दूसरे की शक्ल ना दिखे। सेल्यूलर जेल बहुत साल बेकार पड़ी रही थी। यहां भूकंप और दूसरे विश्व युद्ध की बमबारी के बाद अब सिर्फ तीन विंग ही बचे हैं। भारत की आजादी के बाद इसे ठीक-ठाक किया गया और अंग्रेजों के अत्याचार के बारे में दुनिया को बताने के लिए यहां एक संग्रहालय स्थापित किया गया। एक के बाद एक सेल बने होने से ही जेल का नाम सेल्यूलर जेल नाम पड़ा। 30 मार्च 1872 को शेर अली को वाइपर आइलैंड में फांसी दी गई थी। उसने ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड मायो को मारा था। इसके बाद अंग्रेजों ने सैल्युलर जेल बनवायी जिसमें मजदूर भारतीय कैदी ही थे इस जेल में क्रांतिकारियों के लिए सख्त से सख्त सजा निर्धारित की जाती थी। यहां पर हर शाम को लाइट एंड साउंड शो होता है, जिसमें यहां के इतिहास को बताया जाता है। यहां एक बगीचा है, जहां पुराने जमाने का बरगद का पेड़ है। ओम पुरी की आवाज में बरगद का पेड़ बोल कर अपने समक्ष क्रांतिकारियों पर हुए अत्याचारों की कहानी सुनाता है। यहां कैदियों को मोटी-मोटी बेड़ियां डाल कर रखा जाता था। कैदियों को खाना पत्थर मिलाकर देते थे ताकि वे विरोध ना करें और उन में विरोध करने की ताकत ही ना रहे। जिस स्थान पर कैदियों को फांसी दी जाती थी वह जगह भी लोगों के देखने के लिए उपलब्ध है।

यहां स्थापित संग्रहालय में हर फोटोग्राफ के नीचे उसका विवरण लिखा है। अंग्रेज बैलों के बदले मनुष्यों को जोतकर नारियल का तेल निकलवाते थे। अंग्रेज यहां भारत को स्वतंत्र कराने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को काला पानी की सजा सुनाकर इस द्वीप पर ले आते थे। यहां दूर-दूर तक फैले समुद्र में कैदियों के भागने की कोई संभावना नहीं होती थी। उनकी सजा का एक भाग नारियल के तेल की एक निश्चित मात्रा निकालना होता था, जिसे पूरा न करने पर कोड़े बरसाए जाते थे। वीर दामोदर सावरकर और उनके भाई वहां बंदी थे। पर उन्हें आखरी समय तक नहीं पता लगा कि वे दोनों वहां बंदी हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय जापानियों ने हवाई जहाजों से इस द्वीप पर हमला किया था। संग्रहालय में हवाई जहाज से जापानियों के आक्रमण की फोटो हैं। वर्ष 1943 में जापानियों ने अंडमान द्वीप पर कब्जा कर लिया था। और उनके सहयोग से वर्ष 1943 में पोर्ट ब्लेयर में नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने भारत का तिरंगा झंडा फहराया और भारत के आजाद होने की घोषणा की, जिसे कई देशों ने मान्यता भी प्रदान की थी। वर्ष 1945 तक ये द्वीप समूह जापानियों के कब्जे में रहे लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध में जापानियों की हार के साथ ही पुनः ब्रिटिश सरकार का कब्जा इन द्वीपों पर हो गया। जापानियों द्वारा बनाए गए बंकर आज भी यहां देखे जा सकते हैं।

12 तारीख की प्रातः हम जेटी से जहाज द्वारा हैवलॉक द्वीप पहुंचे। मार्ग में हमारे ड्राइवर ने हमें बताया कि अंडमान निकोबार द्वीप समूह के द्वीप, चट्टानों वाले द्वीप, सफेद चांदी सी रेत वाले द्वीप, आकर्षक प्रवाल, मूंगों के द्वीप आदि अलग-अलग प्रकारों के हैं। समुद्र के किनारे की रेत कुछ तटों पर बहुत बारीक सफेद और कुछ तटों पर थोड़ा खुरदरी सफेद होती है। यहां समुद्र के अनेक रंग दिखते हैं, दूधिया, आसमानी, नीला, गहरा नीला, फिरोजी, हरा, जाने क्यों कभी काला सा भी दिखता है शायद काले पानी की सजा इसीलिए कहते हो। यहां पर बांग्लादेश युद्ध के समय बांग्लादेश से आए शरणार्थियों को जमीन दी गई थीं। वही लोग बड़ी-बड़ी कंपनियों को रिजोर्ट इत्यादि बनाने के लिए अपनी जमीन बेच देते हैं।

यहां हम डाल्फिन रिजोर्ट में रुके। समुद्र तट पर बने इस रिजोर्ट के विशाल परिसर में अनेक नारियल के वृक्ष थे। रिजोर्ट से कुछ ही दूरी पर काला पत्थर समुद्र तट है, जहां का सूर्योदय प्रसिद्ध है। यह पथरीला तट नहाने के लिए ठीक नहीं है। वैसे अगले दिन हमें हमारे रिजोर्ट के तट से भी सुंदर सूर्योदय दिखा। हैवलॉक द्वीप के एलिफेंट समुद्र तट पर हमने जल क्रीड़ा का आनन्द उठाया। वहां से हम राधानगर समुद्र तट पहुंचे। ब्लू फ्लैग प्रमाणन (certification) रखने वाला राधानगर समुद्र तट एशिया के सबसे साफ समुद्र तटों में से एक है। ब्लू फ्लैग प्रमाणन दुनिया के सबसे साफ समुद्र तटों को कई निर्धारित मानदंडों को पूरा करने पर दिया जाता है।

अगले दिन 13 तारीख को हम नील आईलैंड पहुंचे। नील आईलैंड में अत्यंत सुंदर नीला-फिरोजी रंग का समुद्र, उसमें तैरती मछलियां, दूर कुछ मैनग्रोव पेड़ दिखाई दिए। मैंग्रोव समुद्र के नमकीन पानी में उगने वाले पेड़ हैं जिनकी जड़ें पानी के ऊपर दिखती हैं ताकि यह सांस ले सके। इस द्वीप की छटा अद्भुत थी। ऊंचे-ऊंचे नारियल के अनेक वृक्ष व पौधे थे। नील आईलैंड के तीन समुद्र तटों भरतपुर समुद्र तट, लक्ष्मणपुर समुद्र तट और नेचुरल ब्रिज समुद्र तट का भी हमने भ्रमण किया।

नील द्वीप पर 90% लोग बंगाली हैं। बांग्लादेश युद्ध के समय बांग्लादेश से आए शरणार्थियों को सरकार ने यहां पर जमीनें दे दी थीं। पीने के जल की उस द्वीप पर बहुत कमी है और यहां पंचायतों में बारिश का जल एकत्र कर उसे जल उपचार तंत्र द्वारा शुद्ध किया

अन्डमान के हैवलौक द्वीप का एक मनोरम दृश्य।

जाता है, जिसे लोग वहां से पैसे देकर बड़े-बड़े केन में लाते हैं, जिससे दो तीन दिन पीने का काम चल जाए। बाकी के कामों के लिए उपचार रहित जल का उपयोग किया जाता है।

हम 'नेचुरल ब्रिज' समुद्र तट पर गए। यह कोरल से बना प्राकृतिक ब्रिज है। कोरल एक छोटा सा कठोर कंकाल वाला समुद्री जीव होता है जो समूह में रहता है हजारों वर्षों में धीरे-धीरे कोरल के कंकालों के एकत्रित होने से कोरल रीफ बनती है। भारत में कोरल रीफ मुंबई, कच्छ की खाड़ी, मन्नार की खाड़ी, अंडमान और निकोबार आदि स्थानों पर पाई जाती है। कोरल तीन प्रकार के होते हैं फ्रिंजिंग, बैरियर और अटोल। अधिकांश कोरल फ्रिंजिंग प्रकार के होते हैं और यह समुद्र तट के समीप पाए जाते हैं। बैरियर कोरल समुद्र तट से दूर पाए जाते हैं। एटोल कोरल डूबे हुए ज्वालामुखीय द्वीप के चारों ओर पाए जाते हैं। कोरल रीफ, समुद्री तूफानों और बाढ़ से समुद्र तट की रक्षा करती है। कोरल रीफ से दवाइयां, भोजन मिलता है क्योंकि यह विभिन्न प्रकार की मछलियों का घर होती हैं, पर्यटन को बढ़ावा मिलता है क्योंकि यही स्कूबा डाइविंग और स्नोरकलिंग का आकर्षण होती है।

नील द्वीप के 'नेचुरल ब्रिज' तट पर दूर-दूर तक काले-काले मिट्टी के बड़े-बड़े ढेले से पड़े थे। जब हमने पूछा तब गाइड ने बताया कि यह मिट्टी नहीं है आप इसे छू कर देखिए यह पत्थर है और यह मृत कोरल हैं। लो टाइड आने पर मृत कोरल के बीच-बीच में बने गड्ढों में रुके पानी में कई तरीके के समुद्री जीव जंतु दिखाई देते हैं और यह स्थान एक प्राकृतिक एक्वेरियम बन जाता है, जिसमें रंग बिरंगी क्लाउन फिश, स्टार फिश, सीप, हर्मिट क्रैब, सी अर्चीन, आदि दिखाई देते हैं। हाई टाइड होने पर यह सब पानी के अंदर चले जाते हैं।

नेचुरल ब्रिज के तट तक जाने के लिए पेड़ों की जड़ों से बनी प्राकृतिक सीढ़ियों से नीचे उतरना पड़ा। यहां केवड़ा फ्रूट के बड़े-बड़े पेड़ हैं। यह जहरीला फल है। इससे आदिवासी लोग एक नशीला पेय पदार्थ बनाते हैं। यहां पर नीमो पाइंट है, जहां पर नीमो फिश जिसे क्लाउन फिश भी कहते हैं, का घर है। पानी की तली में बिना हिले डुले पड़ी एक खीरे की आकृति दिखाकर हमारे गाइड ने बताया- यह समुद्री खीरा (सी कुकम्बर) है। चीन व जापान में समुद्री खीरे की काफी मांग होने के कारण इसकी तस्करी की जाती है। समुद्री खीरे की निचली सतह पर एक जैली जैसा पदार्थ होता है जो जहरीला होता है। नीले रंग की सीप (ओयस्टर) दिखी जिसको छूने पर वह बंद होने लगती है, उसके किनारे इतने नुकीले होते हैं कि अगर उंगली अंदर आ जाए तो वह कट जाती है। कहते हैं कि यह सीप अपनी जिंदगी में एक बार अपना सेक्स चेंज कर लेती है। ब्रिटल स्टार फिश कोरल में रहती है। बहुत बड़ी स्टारफिश जीवित कोरल को खाती है। सी अर्चीन, कोरल को खाता है और गड्ढे कर देता है, उन गड्ढों में ही यह दिखाई देते हैं। इसके नुकीले कांटे होते हैं जिन्हें चुभने पर वह त्वचा के अंदर चले जाते हैं जिससे सेप्टिक हो जाता है। नीले रंग की नियॉन मछलियां दिखीं जो चमकती रहती हैं, मृत कोरल पर चलते हुए हमें बहुत सारे समुद्री कॉकरोच दिखाई दिए। यहां क्रेब, टाइगर फिश, जेब्रा फिश, लोबस्टर, भूरे रंग की बहुत बड़ी सीप, भिन्न आकार के कोरल जैसे ब्रेन कोरल, फिंगर कोरल, स्पंज कोरल, नेचुरल कोरल ब्रिज और समुद्री मशरूम, समुद्री महुआ के पेड़, मैनग्रोव पेड़ इत्यादि दिखे। यहां पर एक फिश फीडिंग पॉइंट भी है जहां पर पर्यटक बिस्किट डालते हैं और मछलियां तेजी से उसे लपक लेती हैं।

हेवलोक द्वीप में जल क्रीडाएं।

सायंकाल सूर्यास्त का दृश्य लक्ष्मणपुर बीच से देखना अत्यन्त सुखद अनुभव था। ऊंचे-ऊंचे पेड़ों और हरियाली से आच्छादित संकरे से घुमावदार रास्ते से होते हुए हम समुद्र तट तक पहुंचे। सूर्य का रंग धीरे-धीरे पीला और नारंगी आभा लिए अस्त होने को अग्रसर लगता है, उसका वैसा ही प्रतिबिंब जल में दिखाई देता है। सूर्य की किरणें दूर-दूर तक सुनहरी आभा जल में बिखेर देती हैं सूर्यास्त के समय दूर क्षितिज पर फैली पीली नारंगी रोशनी और उसमें चमकता पानी, आंखें इस दृश्य को देखते रहना चाहती हैं लेकिन कुछ ही क्षणों में पानी के भीतर नारंगी लाल सूर्य का गोला उतरने लगता है और धीरे-धीरे सूर्य देव पानी के पीछे छुप जाते हैं और कुछ ही क्षणों में अंधेरा छाने लगता है और सागर का हरहराता काला पानी, तेज हवा में हिलते काले-काले, ऊंचे-ऊंचे पेड़ों का शोर भीतर तक भय उत्पन्न कर देता है।

14 तारीख की सुबह-सुबह हम भरतपुर तट पर स्कूबा डाइविंग करने पहुंचे। हल्की बारिश निरंतर हो रही थी। वहां पर हमें छह लोग और मिले और हम सभी स्कूबा ड्राइविंग के लिए चले गए। लगभग 2 घंटे बाद हम समुद्र की रंगीन सुंदर दुनिया देखकर बाहर लौटे। इसके बाद हमें सी वॉक और स्नोरकलिंग करना था। हम तट पर पहुंचे और थोड़े ही देर में तट के बंद होने की घोषणा होने लगी। पूछने पर पता लगा कोस्ट गार्ड ने वहां पर एक मगरमच्छ देखा है। तट के नजदीक भी जाने से मना कर दिया गया। समुद्री मगरमच्छ बहुत खतरनाक होते हैं। यह व्यक्ति को खींचकर बहुत गहरे समुद्र में ले जाते हैं। 14 तारीख की दोपहर तक हम पोर्ट ब्लेयर के मैगपौड रिजोर्ट पहुंचे गये थे। रिजोर्ट जाने के

मार्ग में एक स्थान पर बहुत जंग लगे टूटे हुए जहाज ही जहाज दिखाई दिए। यहां पर उनकी मरम्मत कर उन्हें ठीक किया जाता है।

यहां पोर्ट ब्लेयर में 'समुद्रिका' समुद्री संग्रहालय है। प्रवेश द्वार पर विशालकाय व्हेल का कंकाल बाहर ही रखा है। पास ही बने एक गोलाकार छोटे से तालाब में कई मछलियों के साथ शार्क मछली भी है। अंदर प्रवेश करने पर ही बहुत बड़े आकार की दो सीप रखी हैं सीप को 'जाइंट क्लेम' कहा जाता है। अंदर अनेक आकार के कोरल जैसे फूलगोभी कोरल, बोल्डर कोरल, सबमिसिव कोरल, सरपेंट कोरल, फिंगर कोरल, प्लेट कोरल, टेबल कोरल, मार्बल कोरल, ब्लू कोरल, आर्गन पाइप कोरल, मशरुम कोरल, स्टैग होर्न कोरल, ब्रेन कोरल, फायर कोरल इत्यादि दिखाई दिए जो हजारों वर्षों में तैयार होते हैं। क्लाउन फिश जिसे नीमो कहते हैं, एक सी एनिमोन पर बैठी हुई थी या लेटी हुई आराम कर रही थी। हमें वहां पर गाइड ने बताया कि सी एनिमोन इस फिश को आरामदायक बिस्तर देता है इसके बदले यह फिश सी एनिमोन को फीड करती है। नीमो फिश, फिंगर कोरल को खुरच-खुरच कर रेत में बदल देती है और यही कोरल यह सी एनिमोन को खिलाती है। यह समुद्र संग्रहालय समुद्र के भीतरी जीवन और जीव जंतुओं से परिचय कराता है। समुद्री जीवन, समुद्री मछलियां और रहस्य और रोमांच से भरी अनेक कहानियां मन को मोह लेती हैं। समुद्र की अनंत गहराइयाँ अनंत रहस्यों को समेटे हैं। जिनमें से हम कुछ एक को ही देख और समझ सकते हैं।

समुद्रिका समुद्री संग्रहालय में हमारी गाइड ने हमें 26 दिसंबर वर्ष 2004 में आई सुनामी की विभीषिका के बारे में भी बताया, गाइड ने बताया-26 दिसंबर वर्ष 2004 को इंडोनेशिया के नीचे समुद्र की गहराई में भारतीय व बर्मा प्लेटों के रगड़ने से, हुई टूटन से उठे विध्वंसक भूकंप से उठी विनाशकारी सुनामी ने अनेक देशों के लाखों लोगों को लील लिया। सुनामी में निकोबार के जनजातीय लोग बच गए क्योंकि उन्हें समुद्र के व्यवहार की समझ थी। उन्हें यह पता लग गया था कि कुछ विनाशकारी होने वाला है। वह जंगलों के बहुत अंदर जाकर छुप गए। भूकंप के बाद समुद्र कई सौ मीटर तक पीछे चला गया था। 26 दिसंबर को क्रिसमस की छुट्टियां मनाने आए लोगों ने भूकंप का अनुभव किया और फिर यह आश्चर्यजनक घटना देखकर लोगों ने समुद्र की तरफ आगे बढ़ाना शुरू कर दिया जो कि उनकी घातक भूल थी। कुछ मिनट बाद समुद्र लौटा तो कई मीटर ऊंची लहरों के साथ, जो सब कुछ बहा कर ले गई। कुछ द्वीपों में नुकसान कम हुआ क्योंकि उनके आगे ऊंची पहाड़ियां थीं। जिन्होंने ऊंची लहरों को रोक लिया। कुछ द्वीप समुद्र में डूब गए तो कुछ अपने स्थान से ही खिसक गए। निकोबार द्वीप समूह के कार निकोबार द्वीप में स्थित एयर फोर्स स्टेशन इस सुनामी में नष्ट हो गया था जिससे कई एयरफोर्स अधिकारी और उनके परिजनों की जान चली गई। 'इंदिरा पॉइंट' निकोबार द्वीप समूह के ग्रेट निकोबार में स्थित है जिसे पिगमिलियन पॉइंट कहा जाता था। पिगमिलियन पॉइंट का नाम 1984 में इंदिरा पॉइंट कर दिया गया था। 2004 की सुनामी ने ग्रेट निकोबार की आधी से अधिक वन संपदा को नष्ट कर दिया और इस बिंदु का अस्तित्व ही खत्म कर दिया। इस सुनामी के बाद समुद्र, द्वीप में काफी अंदर तक आ आया है। इंदिरा पॉइंट के पास स्थित लाइटहाउस सुनामी की ऊंची लहरों को झेल गया, उसका ऊपरी हिस्सा आज भी दिखाई देता है लेकिन उसके पास की पावर हाउस इत्यादि कई संरचनाएं पूरी तरह नष्ट हो गईं।

गाइड ने आगे बताया -पूर्व पश्चिम अन्तर्राष्ट्रीय शिपिंग कॉरिडोर' स्विस कैनाल से शुरू होता हुआ हांगकांग तक जाता है। हिंद महासागर के क्षेत्र में कोलंबो, मलेशिया और सिंगापुर के बन्दरगाह हैं। भारत का कोई बन्दरगाह इस क्षेत्र में नहीं है। इसीलिए अब बहुत बड़े जहाजों के आवागमन के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल (ICCT) ग्रेट निकोबार द्वीप पर बनने जा रहा है। इस समय कोलंबो पोर्ट

अंडमान निकोबार द्वीप समूह के द्वीप, चट्टानों वाले द्वीप, सफेद चांदी सी रेत वाले द्वीप, आकर्षक प्रवाल, मूंगों के द्वीप आदि अलग-अलग प्रकारों के हैं। समुद्र के किनारे की रेत कुछ तटों पर बहुत बारीक सफेद और कुछ तटों पर थोड़ा खुरदरी सफेद होती है। यहां समुद्र के अनेक रंग दिखते हैं, दूधिया, आसमानी, नीला, गहरा नीला, फिरोजी, हरा, जाने क्यों कभी काला सा भी दिखता है शायद काले पानी की सजा इसीलिए कहते हो।

अन्डमान एवं निकोबार द्वीप की जरावा जनजाति।

अन्डमान के हैवलोक द्वीप पर जेटी का एक दृश्य।

पर बड़े जहाज रुकते हैं और जहाजों में आये सामान को छोटे-छोटे जहाजों के माध्यम से भारत तक पहुंचाया जाता है। ICCT बनने के बाद बड़े जहाज भारत में ही रुकने लगेंगे। इसके अलावा अंडमान निकोबार द्वीप समूह के पास तेल और गैस के विशाल भंडार का पता चला है। संभवतः आने वाले दशकों में हमारी गिनती भी तेल उत्पादन करने वाले देशों में हो जाए।

हमने पोर्ट ब्लेयर में मुरूगन मंदिर का भी भ्रमण किया। पोर्ट ब्लेयर का मुरूगन मंदिर भगवान कार्तिकेय को समर्पित है। द्रविडियन वास्तुकला को दर्शाता यह मंदिर अत्यंत सुंदर है। भगवान मुरूगन भगवान शिव के पुत्र हैं। मंदिर में माता पार्वती और भगवान शिव की भी मूर्तियां हैं।

अंडमान के द्वीपों में चेन्नई और कोलकाता से सब्जियां आती हैं क्योंकि यहां सब्जियां नहीं उगती इसलिए बहुत महंगी होती हैं। पोर्ट ब्लेयर में सब्जियां एक बहुत ही अच्छे बने हुए मार्केट में बिकती हैं,

पोर्ट ब्लेयर घूमते हुए हम उस स्थान पर भी गए जहां पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने तिरंगा फहराया था। इसके बाद हम मेगापोड रिजोर्ट में लौट आए। यह अत्यंत शांत स्थान पर, जेटी के बहुत पास, एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। इसका नाम मेगापोड पक्षी के नाम पर है जो ग्रेट निकोबार द्वीप में पाया जाता है। इस पक्षी के पैर बहुत मजबूत होते हैं और पंजे बहुत बड़े होते हैं। यह पत्तियों और घास का टीला बनाकर उसमें अपने अंडे देता है उन पत्तियों की सड़न से उत्पन्न गर्मी से अंडों से चूजे निकलते हैं, और बाहर आते ही वे चलने फिरने और अपना खाना ढूंढने में सक्षम हो जाते हैं। 15 तारीख की सुबह 11:00 बजे दिल्ली जाने के लिए हवाई जहाज में बैठने के साथ ही अंडमान की 4 दिन की यात्रा समाप्त हुई लेकिन अंडमान में और भी बहुत कुछ था जो छूट गया था जिसे देखने शायद हम फिर कभी जाएं।

सम्पर्क करें:
डॉ. अर्पिता अग्रवाल
120 B/2 साकेत,
मेरठ 250003
ईमेलः fca-arpita-meerut@gmail.com